VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS 16 OCT 2016 RECEIVED

PHILOSOPHY (TEST CODE : 785)

Name of Candidate	ANITA YADAV		
Medium Hindi/Eng.	HINDI	Registration Number	16663
Center	M N, DELHI	Date	16/10/16

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1 (a)	12.5	
(b)	12.5	
(c)	12.5	
(d)	12.5	
2 (a)	12.5	
(b)	12.5	
(c)	12.5	
(d)	12.5	
3 (a)	20	
(b)	15	
(c)	15	
4 (a)	20	
(b)	15	
(c)	15	
5 (a)	20	
(b)	15	
(c)	15	

Total Marks Obtained:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are FIVE questions printed in HINDI and ENGLISH.
इसमें पाँच प्रश्न हैं तथा हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में छपे हैं।
3. All questions are compulsory.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Alignment Competence
2. Context Competence
3. Content Competence
4. Language Competence
5. Introduction Competence
6. Structure - Presentation Competence
7. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. (a) 'Moor's Detence of common sense essentially is distance of ordinary language ? Comment. 12.5

'मूर का सामान्य बुद्धि का पक्ष पोषण आवश्यक रूप से सामान्य भाषा का पक्ष पोषण है।' चर्चा कीजिए।

वस्तुवादी दार्शनिक मूर सामान्य बुद्धि के ~~खण्डन~~ समर्थन द्वारा दार्शनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। मूर के अनुसार सामान्य विश्वास दो प्रकार के होते हैं:-

(क) स्वयं से संबंधित (ख) अन्य से संबंधित। स्वयं से संबंधित विश्वास भी दो सूची में बाँटे जाते हैं एक स्वयं के शरीर से संबंधित विश्वास तथा दूसरे अन्य वस्तुओं से संबंधित विश्वास।

इन सभी विश्वासों को मानने तथा व्यक्त करने के लिए साधारण भाषा ही पर्याप्त है। इसके लिए दर्शन व तर्कशास्त्र के समान किसी आकारिक भाषा की आवश्यकता नहीं होती है जैसा कि रसेल व पूर्ववर्ती विटगिन्स्टीन ने माना है। ~~क्य~~

क्योंकि सामान्य विश्वासों का ज्ञान अवबोध से होता है। इसके लिए कोई तर्क देने की आवश्यकता नहीं है। सभी सामान्य बुद्धि के वयस्कों द्वारा इसका ज्ञान प्राप्त किया जाता है, परन्तु ये बहुमत के विश्वास हों यह आवश्यक नहीं है। सामान्य बुद्धि के द्वारा जाने वाले विश्वासों के समर्थन में मूर ने कुछ तर्क दिए हैं:-

- सार्वभौमिक स्वीकृति संबंधी तर्क
- अनिवार्यता संबंधी तर्क
- अनुभव संबंधी तर्क

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

• स्वप्न आधारित तर्क • विरोधाभास आधारित तर्क
• परम्परा (कन्विशन) आधारित तर्क।

परंतु मूर केवल साधारण भाषा का समर्थन करते हुए भी अपने दर्शन से भटक जाते हैं। मूर द्वारा दार्शनिक समस्याओं का अति सरलीकृत समाधान प्रस्तुत किया है। दर्शन व तर्कशास्त्र में आकारिक भाषा का महत्व है। यदि साधारण भाषा से ही सामान्य विश्वासों को समझाया जा सकता है तो मूर द्वारा इसके समर्थन में तर्क देना व्यर्थ है। इसी के आधार पर मूर प्रत्ययवाद के खण्डन का प्रयास करते हैं परंतु सफल नहीं हो पाते। स्टेस ने इसी कारण उनकी आलोचना की है।

1. (b) 'Truth is subjectivity' – Comment 12.5

'सत्य आत्मीयता है।' टिप्पणी।

अस्तित्ववादी दार्शनिक सोरेन किर्केगार्द के अनुसार सत्य वही है जो जिया जाता है। अर्थात सत्य का ज्ञान वस्तुनिष्ठ रूप से नहीं हो सकता क्योंकि वस्तुनिष्ठता में 'सत्य' व 'आत्मीयता' में से एक को विषय व दूसरे को विषयी मानना पड़ेगा। इससे दोनों में से एक को दूसरे पर निर्भर मानना पड़ेगा।

इसी को आधार मानते हुए किर्केगार्द धार्मिक स्तर पर सत्य की पूर्ण अनुभूति का समर्थन करते हैं। सत्य को प्राप्त करने के लिए मानव को स्वयं के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अस्तित्व का ज्ञान होना आवश्यक है। इसकी तीन अवस्थाएं होती हैं - ① संवेगात्मक ② नैतिक ③ धार्मिक।

संवेगात्मक अवस्था तात्कालिकता की होती है। इसमें मनुष्य सांसारिक सुख तक अपने आपको केन्द्रित रखता है। इसमें तीन प्रकार की अनुभूति उसे होती है - डॉन जुआन, फॉस्ट व घुमक्कड़ यहूदी (एहास्युरस) यह निराशा की अवस्था है।

इससे ऊबकर वह नैतिक अवस्था में प्रवेश करता है। इस अवस्था में उसे थोड़े समय तक नैतिक कर्म करने के बाद निराशा होती है क्योंकि नैतिक नियम अमूर्त हैं, इसके पश्चात वह धार्मिक अवस्था में प्रवेश करता है।

धार्मिक अवस्था में वह पूर्ण रूप से सत्य को महसूस करता है। यह निरपेक्षता की अवस्था है। इसमें समस्त वस्तुनिष्ठता समाप्त हो जाती है। ये सभी अवस्थाएं क्रमिक हैं परंतु एक साथ भी रह सकती हैं।

सत्य को नहीं जीने की स्थिति में मनुष्य को 'सिकनेस अनटू डैथ' की अनुभूति होती है। अतः सत्य को पूर्ण रूप से जीने पर ही उसे प्राप्त किया जा सकता है, किसी बाहरी माध्यम से उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। किर्केगार्द ने इसे इसहाक के माध्यम से समझाया है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. (c) According to Quine, Holistic approach of language is base of knowledge explain. 12.5

'क्वाइन के अनुसार ज्ञान का आधार भाषा का समग्रतावादी दृष्टिकोण है' व्याख्या करें।

उक्त अनुभववादी दार्शनिक सत्ता के साथ-साथ भाषा व अर्थ को भी अनुभव के आधार पर सिद्ध करते हैं।

क्वाइन से पूर्व लॉक, बर्कले, ह्यूम ने अर्थ की इकाई 'शब्द' को, तार्किक भाववादियों ने 'वाक्य' को ~~तथ्य~~ माना। परंतु क्वाइन संपूर्ण वैज्ञानिक भाषा को ही अर्थ की इकाई मानता है। इसी कारण इसे समग्रतावादी दार्शनिक भी कहा जाता है।

क्वाइन के अनुसार शब्द का अपने आप में कोई अर्थ नहीं है। शब्द स्वतंत्र रूप से कुछ भी परिभाषित नहीं कर सकता। इसी प्रकार वाक्य का भी कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। शब्द व वाक्य का अर्थ संदर्भ से तय होता है। इस कारण संपूर्ण भाषा ही ज्ञान का स्रोत है, न कि शब्द या वाक्य।

इसी आधार पर क्वाइन ने संश्लेषणात्मक व विश्लेषणात्मक वाक्यों के मध्य विभाजन का खंडन किया। क्वाइन के अनुसार दोनों ही प्रकार के वाक्य अनुभव से जुड़े हुए हैं, संश्लेषणात्मक वाक्यों के केन्द्र में तथा विश्लेषणात्मक वाक्यों की परिधि में अनुभव होता है। संश्लेषणात्मक वाक्य में 'तथ्य तत्व' व

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

विश्लेषणात्मक वाक्य में 'अर्थ - तथ्य' की प्रधानता होती है।

काण्ट व तार्किक भाववादियों द्वारा दिए गए संश्लेषणात्मक व विश्लेषणात्मक भेद को नहीं माना जा सकता।

क्वाइन के अनुसार संवेदनों के आधार पर शब्दों के अर्थ को भी स्वीकार नहीं किया जा सकता इसी कारण वह इन्द्रिय सूचक कथनों के वस्तुमूलक रूपान्तरण का भी विरोध करता है। क्योंकि शब्द का अर्थ संदर्भ ही तय करता है।

1. **(d)** What is Russell's logical atomism? 12.5

रसेल का तार्किक परमाणुवाद क्या है?

रसेल जगत की व्याख्या भाषा के आधार पर करने के क्रम में तार्किक परमाणुवाद का समर्थन करते हैं। जगत व भाषा की रचना समान है। परमाणुवाद से तात्पर्य है कि जगत की रचना अणुओं से हुई है तथा ये अणु भौतिक न होकर तार्किक हैं।

तार्किक अणु वह होते हैं जिनका ज्ञान एक्विनेटेंस के द्वारा होता है अर्थात साक्षात परिचयात्मक ज्ञान जो किसी अन्य पर निर्भर नहीं होता। यह दो प्रकार का होता है - सामान्य तथा विशेष का ज्ञान। विशेष दो प्रकार के होते हैं - संबंध व गुण। तथ्य का निर्माण

सामान्य तथा गुण व संबंध को जोड़कर किया जाता है। रसेल चार प्रकार के तथ्य मानता है – (क) सामान्य व विशेष (ख) भावात्मक व निषेधात्मक (ग) अनिवार्य तर्क पर आधारित (घ) ~~विश्वास~~ सामान्य विश्वास पर आधारित तथ्य।

यह तार्किक परमाणुवाद का तत्वमीमांसीय पक्ष है। तार्किक पक्ष में रसेल का मानना है कि तार्किक वाक्य दो प्रकार के होते हैं – अणु वाक्य व आण्विक वाक्य (अणु वाक्यों से मिलकर आण्विक वाक्य बनते हैं। ये वाक्य अणु वाक्यों के सत्यता फलन होते हैं। इस आधार पर पुनरुक्ति, व्याघात वाक्य बनते हैं जो दर्शन व तर्कशास्त्र में होते हैं तथा हमेशा सत्य होते हैं।

~~एक अन्य प्रकार~~ तार्किक संरचना का निर्माण भी इसी आधार पर होता है। जगत का ज्ञान संवेदनों की तार्किक रचना से ही होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि रसेल का तार्किक परमाणुवाद जगत को भाषा की रचना के आधार पर समझने का प्रयास है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. **(a)** "Existence precedes essence". Explain. 12.5

'अस्तित्व सार का पूर्ववर्ती होता है।' व्याख्या करे।

अस्तित्ववादी दार्शनिकों का मानना है कि मानव अपने अस्तित्व का स्वयं निर्माण करता है। प्लेटो व अरस्तू जैसे दार्शनिकों का मानना था कि वस्तु के निर्माण से पूर्व उसके सार का ज्ञान होना आवश्यक है। यह सार ही अस्तित्व का आधार होता है। इस क्रम में अस्तित्व सार से पश्चात आता है।

परंतु अस्तित्ववादी दार्शनिक सार्त्र ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते इस कारण उनके अनुसार अस्तित्व प्राथमिक है। सार का निर्माण तो व्यक्ति स्वयं अपने स्वतंत्र निर्णयों द्वारा करता है। जब बालक को प्रथम बार अपने अस्तित्व की अनुभूति होती है तभी से उसके द्वारा अपने सार निर्माण का कार्य किया जाता है। उसके पश्चात वह निरन्तर स्वतंत्र निर्णय व उत्तरदायित्व की भावना से प्रेरित होकर जीवन की सार्थकता का निर्माण करता है। मानव में "निरंतर उभरने की क्रिया" है। इसका कारण उसमें 'अभाव की चेतना' है।

क्योंकि पूर्णता तो अचेतन वस्तु का लक्षण है जिसके सार का निर्माण अस्तित्व से पूर्व किया जाता है। पूर्णता ~~एक~~ 'एब्सर्ड' होती है जिससे 'आत्मप्रवंचना' पैदा होती है। इसी कारण सार्त्र का मानना है कि

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

"मानव वह नहीं है, जो वह है,
बल्कि वह, वह है, जो वह नहीं है।" अर्थात
मनुष्य का भविष्य उसके स्वयं के निर्णयों
से निर्धारित होगा अत: उसका वर्तमान
परिवर्तित होने वाला है।

इस प्रकार सार्त्र का मानना है
कि मानव अपने ~~अस्तित्व~~ सार का निर्माता स्वयं
है। इसके लिए उसे अपने अस्तित्व की
अनुभूति होना आवश्यक है।

2. (b) Explain the theory of intentionality. 12.5

हुर्सल के विषयापेक्षित सिद्धांत को व्याख्या कीजिए।

हुसर्ल ने संवृत्तिशास्त्र के माध्यम से
सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से रहित चेतना
में विद्यमान "शुद्ध संवृत्ति भाव" की खोज
करने का प्रयास किया है। हुसर्ल ने ब्रेंटानो
के समान चेतना में विषय की अपेक्षा को
स्वीकार किया है। परंतु हुसर्ल के अनुसार
चेतना में यह अपेक्षा 'विषय' की नहीं
होती बल्कि अर्थ की होती है जिसे
'नोएमा' कहा जाता है। नोएमा को प्राप्त
करने की प्रक्रिया नोएसिस कहलाती है।

नोएमा को ही शुद्ध संवृति भाव कहा जाता है। इसके द्वारा अर्थ की एकता स्थापित की जाती है।

चेतना में उपस्थित शुद्ध संवृति भाव की प्राप्ति भावात्मक व निषेधात्मक क्रिया द्वारा प्राप्त की जाती है। इसके लिए कोष्ठीकरण व अपचयन किया जाता है। चेतना को समस्त मनोवैज्ञानिक व प्राकृतिक विश्वासों से कोष्ठीकृत कर दिया जाता है। इसके पश्चात संवृति शास्त्रीय, तात्विक व मूर्तकल्पी अपचयन द्वारा चेतना में उपस्थित नोएमा को प्राप्त किया जाता है।

यह शुद्ध संवृति भाव चेतना के द्वारा उत्पन्न नहीं होने के कारण आत्मनिष्ठ नहीं है, बल्कि यह चेतना को प्रदत्त है। इसी के परिणामस्वरूप चेतना या आत्मा की सत्ता भी सिद्ध होती है क्योंकि "शुद्ध संवृति भाव" चेतना में ही नीहित होता है। उसके बाहर नहीं। हुसर्ल का मानना है कि आत्मा संबंधी निष्कर्षों की स्थापना उसका उद्देश्य नहीं था बल्कि ये तो नोएमा की स्थापना के प्रयास में उभर आती है।

विषयापेक्षी सिद्धान्त के द्वारा ही हुसर्ल चेतना में उपस्थित शुद्ध संवृति भाव की स्थापना करते हैं जो कि सभी पूर्वाग्रहों से रहित है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. (c) Picture theory (Short Notes) 12.5

चित्र सिद्धांत (टिप्पणी करें)

पूर्ववर्ती विटगिन्सटीन ने चित्र सिद्धान्त के माध्यम से जगत व भाषा के संबंध का वर्णन किया है। भाषा के निर्देशात्मक सिद्धान्त के आधार पर माना जाता है कि भाषा जगत का चित्र प्रस्तुत करती है क्योंकि भाषा व जगत के मध्य 'तार्किक आकार की समानता' पाई जाती है। विटगिन्सटीन के अनुसार जो शब्द किसी चित्र को संकेतित नहीं करते वे निरर्थक हैं जैसे तत्वमीमांसा सौन्दर्यशास्त्र व नीतिशास्त्र के कथन।

जगत का चित्र प्रस्तुत करने वाली प्रतिज्ञप्तियाँ प्राथमिक प्रतिज्ञप्तियाँ कहलाती हैं। इनके सत्यता फलन से मिश्र प्रतिज्ञप्तियाँ बनती है। भाषा जगत का चित्र प्रस्तुत करती है इसके निम्नलिखित नियम होते हैं। —

- भाषा व जगत के अवयवों की संख्या में समानता। जैसे प्रतिज्ञप्ति व तथ्यों नाम व विशेषों में समानता।
- प्रतिज्ञप्ति व तथ्यों के क्रम में समानता जैसे बिल्ली चटाई पर बैठी है। वाक्य व वास्तविकता में समानता।
- प्रतिज्ञप्ति व तथ्यों का एक दूसरे में रूपांतरण जैसे संगीत व संगीत लिपि का एक दूसरे में रूपांतरण। इस प्रकार स्पष्ट है कि चित्र प्रतिबिम्ब के समान नहीं है, बल्कि यह व्याख्या है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

कुछ भाषा, व्याकरण संबंधी शब्दों का चित्र नहीं बनता परंतु उन्हे दिखाया जा सकता है (सेईंग शोईंग) चित्र सिद्धान्त की आलोचना स्वयं उत्तरवर्ती विट गिन्सटीन द्वारा की जाती है। उसका मानना है कि भाषा को केवल चित्र तक सीमित नहीं किया जा सकता। भाषा के अनेक प्रयोग किए जाते हैं, अत: अर्थ नहीं बल्कि भाषा का उपयोग महत्वपूर्ण है। भाषा का अर्थ चित्र सीमित करने से वस्तु के टूटने पर अर्थ का टूटना भी मानना पड़ेगा। इसी कारण बाद के विट्गिन्सटीन द्वारा भाषायी खेल के सिद्धान्त के माध्यम से इस समस्या को दूर किया गया।

2. (d) Being in the world – Heideggar. Explain. 12.5

'हाइडेगर के अनुसार मानव जगत् में अस्तित्वमान है।' व्याख्या करें।

हाइडेगर अस्तित्ववादी दार्शनिक है। हाइडेगर का मानना है कि मूल सत की खोज ही दर्शन का अंतिम उद्देश्य है। परंतु मूलसत की खोज मानव के द्वारा ही की जा सकती है। जब मानव में मूल सत के प्रति उद्वेग उत्पन्न होगा तभी वह मूल सत की ओर आकर्षित होगा इसी कारण उसने मानव को "सत का झरोखा" कहा है।

कल्पनादर्शी तत्वमीमांसा के समर्थकों के विपरीत हाइडेगर का मानना है कि मूल सत की खोज इस जगत में रहकर ही की जा सकती है। इसी कारण उसने <u>दुस्सर्ल</u>

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

के कोष्ठीकरण सिद्धान्त व फिनोमिनोलॉजी का समर्थन नहीं किया।

हाइडेगर के अनुसार जब व्यक्ति सांसारिकता से लिप्त होकर इस जगत में जीता है तो वह अप्रमाणिक जीवन जीता है। परंतु जब वह इस जगत में विद्यमान नश्वरता से सम्पर्क में आता है तो उसे स्वयं के भी नश्वर होने का अहसास होता है। इस भ्रम से मुक्ति पाने के लिए ही वह मूल सत की तरफ उन्मुख होता है। यह जगत जब तटस्थ रूप में होता है तो इसे 'प्रस्तुत जगत' तथा जब यह अस्तित्व के कारण के रूप में होता है तो इसे 'रेडिनेस इन हैण्ड' (तत्पर जगत) कहा जाता है।

जगत में रहने के कारण ही मानव को प्रमाणिक जीवन का अहसास होता है। इससे मूल सत की चेतना उसे प्राप्त होती है। यदि मानव जगत से दूर होता तो उसमें मूल सत के प्रति उद्वेग पैदा नहीं होता। ~~यह~~ मूल सत के प्रति यह आकर्षण कभी बाह्य तत्वों से तो कभी 'अंतःकरण की पुकार', से होता है।

अस्तित्ववान मानव जगत में निरपेक्ष रूप से गीता के स्थितप्रज्ञ की भाँति रहता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. (a) "Throw Metaphysics into fire, science goes with it, if you try to same the science metaphysics returns from the backdoors." Discuss. 20

'ए. ने एअर अगर तत्वमीमांसा को आग में जला देते तो आगे साथ विज्ञान भी जल जाता है तथा विज्ञान को बचाने का प्रयास करे तो तत्वमीमांसा भी बच जाती है'। व्याख्या कीजिए।

तार्किक भाववादी दार्शनिक ए. जे. एयर के अनुसार तत्वमीमांसा के कथन सार्थक नहीं होते अतः दर्शन के क्षेत्र से उनका निरसन किया जाना आवश्यक है। केवल विज्ञान के कथन ही सार्थक होते हैं क्योंकि वे अनुभव पर आधारित होते हैं।

तत्वमीमांसा का खण्डन एयर दो आधार पर करते हैं ~

(क) सत्यापनीय सिद्धान्त

(ख) भाषायी आधार पर

(क) सत्यापनीय सिद्धान्त के आधार पर :— एयर के अनुसार केवल वही कथन सार्थक हैं जो यातो अनुभव द्वारा सत्यापनीय हैं या फिर विश्लेषणात्मक हैं।

सत्यापन के द्वारा केवल वैज्ञानिक कथनों की सार्थकता सिद्ध की जा सकती है। तत्वमीमांसीय कथनों का सत्यापन व्यावहारिक सैद्धांतिक, सबल-निर्बल, प्रत्यक्ष-परोक्ष, किसी भी रीति से संभव नहीं है अतः वे निरर्थक हैं।

(ख) भाषायी आधार पर : एयर का मानना है कि तत्वमीमांसक विस्थापित कवि हैं जो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विभ्रम का शिकार है। वे वास्तविक ~~अनस्ति~~ अनास्तित्व के आधार पर विश्लेषण करनेवाले तत्वमीमांसीय शब्दों का अस्तित्व परलोक में स्वीकार करते हैं। परंतु तत्वमीमांसीय शब्द केवल शब्दजाल मात्र हैं जिन्हें गिबरिस कहा जाता है। ये कोई वास्तविक सूचना प्रदान नहीं करते।

परंतु सत्यापनीय सिद्धान्त की आलोचना ऐंलिसी चर्च के सूत्र $(\sim O_1 . O_2) \vee (O_3 \sim S)$ के आधार पर की जाती है। क्योंकि इस सिद्धान्त के आधार पर किसी भी तत्वमीमांसीय कथन ~~के~~ का सत्यापन किया जा सकता है। इसका खण्डन करने पर वैज्ञानिक कथनों का भी खण्डन होगा।

क्वाइन के अनुसार संश्लेषणात्मक व विश्लेषणात्मक कथन दोनों ही अनुभव से जुड़े हुए हैं। यदि एक का ~~खण्ड~~ निरसन किया जाएगा तो दूसरे का स्वतः निरसन हो जाएगा।

तत्वमीमांसीय कथनों का क्षेत्र व्यापक होता है जबकि विज्ञान के कथन केवल इस लोक से संबंधित होते हैं। यदि

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

तत्वमीमांसा का निरसन किया जाएगा तो विज्ञान के कथन स्वयं निरर्थक हो जाएँगे।

• सत्यापन सिद्धान्त का आधार वाक्य स्वयं सत्यापित नहीं किया जा सकता। इसके आधार पर तत्वमीमांसा का निरसन संभव नहीं है।

• बहुत से वैज्ञानिक सिद्धान्तों का सत्यापन वास्तविक रूप से संभव नहीं हो पाता है। यदि उन्हें सार्थक माना जा सकता है तो तत्वमीमांसा को भी सार्थक माना जा सकता है।

इसी कारण जॉन पासमूर ने कहा था कि अगर तत्वमीमांसा को आग में जला देंगे तो साथ साथ विज्ञान भी जल जाता है तथा विज्ञान को बचाने का प्रयास करें तो तत्वमीमांसा भी बच जाती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. (b) Husserl's Phenomenology completely presupposition less inquiry. critically evaluate. 15

'हुर्सल का संवृत्तिशास्त्र पूरी तरह पूर्वमान्यताओं से रहित दर्शन है।' समालोचनात्मक व्याख्या करें।

संवृत्तिशास्त्र के माध्यम से हुसर्ल सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से रहित होकर चेतना में उपस्थित 'शुद्ध संवृत्ति भाव (नोएमा)' की स्थापना करते हैं। चेतना के विषयापेक्षी सिद्धान्त के माध्यम से उन्होंने इसकी स्थापना की।

इसके लिए हुसर्ल ~~अपच~~ कोष्ठीकरण व अपचयन का सहारा लेते हैं। सर्वप्रथम कुछ समय के लिए सभी प्रकार की प्राकृतिक व ~~तत्व~~ मनोवैज्ञानिक विश्वासों से चेतना को कोष्ठीकृत किया जाता है। यह तटस्थ होने की प्रक्रिया है। इसके पश्चात चेतना में ~~विध~~ विद्यमान समस्त पूर्वाग्रहों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए संवृत्तिशास्त्री, तात्विक व मूर्तकल्पी अपचयन किया जाता है।

अपचयन के पश्चात जो बचता है वही चेतना में विद्यमान शुद्ध संवृत्ति भाव है। यह सभी प्रकार की पूर्वमान्यताओं व पूर्वाग्रहों से रहित है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परन्तु हुसर्ल द्वारा स्थापित यह निष्कर्ष पूर्णतया पूर्वाग्रह से रहित नहीं है क्योंकि यहाँ स्वयं हुसर्ल ने पूर्वमान्यताओं का सहारा लिया। जबकि वह डेकार्ट, हीगल आदि की आलोचना इसी आधार पर करता है।

हुसर्ल ने अपने सिद्धान्त की पूर्वमान्यता के रूप में ब्रेन्टानो द्वारा दिए गए 'चेतना की विषयापेक्षता' सिद्धान्त को मान लिया है। उसका समस्त दर्शन इसी मान्यता पर आधारित है। चेतना हमेशा अपेक्षा करती है। हुसर्ल के अनुसार चेतना अर्थ की अपेक्षा करती है।

इसी प्रकार हाइडेगर के अनुसार संपूर्ण विश्व व प्रकृति से तटस्थ नहीं हुआ जा सकता। यह संभव नहीं है जबकि हुसर्ल इसे अपनी पूर्वमान्यता मान लेता है कि पूर्ण तटस्थीकरण संभव है।

एयर के अनुसार शून्य में किसी सिद्धान्त की स्थापना नहीं की जा सकती।

हुसर्ल की पूर्वमान्यता है कि विषयी व विषय एक ही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वयं हुसर्ल का संवृत्ति शास्त्र पूरी तरह पूर्वमान्यताओं से रहित नहीं है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. (c) Discuss the Strawson's. Theory of person. 15

स्ट्रॉसन के व्यक्ति सिद्धांत की चर्चा कीजिए।

समकालीन दार्शनिक स्ट्रॉसन विवरणात्मक तत्वमीमांसा का समर्थन करते हैं। स्ट्रॉसन मूल सत्ताओं की खोज करते हैं। ये दो प्रकार की होती हैं — (क) मूल विशेष (भौतिक वस्तुएँ) (ख) व्यक्ति।

व्यक्ति सिद्धान्त में स्ट्रॉसन ने व्यक्ति को एक आद्य (प्रिमिटिव) संप्रत्य माना है। इस क्रम में स्ट्रॉसन के समक्ष दो प्रश्न उभर कर आते हैं :-

① क्यों एक ही शरीर पर विभिन्न चेतन स्थितियों का आरोपण किया जाता है।

② चेतन व भौतिक विशेषताओं का आरोपण एक ही सत्ता पर क्यों किया जाता है।

अपना सिद्धांत देने से पूर्व स्ट्रॉसन पूर्व प्रचलित स्वामित्व (डेकार्ट मन-शरीरद्वैत) व अस्वामित्व सिद्धान्त (ह्यूम) का खण्डन करते हैं। अस्वामित्व सिद्धान्त संवेदनों को स्वतंत्र मानता है तथा उनका कोई आधार नहीं मानता जबकि स्ट्रॉसन के अनुसार इससे संवेदनाओं को आधारहीन मानना पड़ेगा जोकि संभव नहीं है। डेकार्ट का मानना है कि चेतन का आधार मन तथा भौतिक परिस्थितियों का आधार शरीर होता है जोकि क्रिया-प्रतिक्रिया के माध्यम से जुड़े

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

हैं। जबकि स्ट्रॉसन का मानना है कि इससे शरीर रहित मन को मानना पड़ेगा। अतः इसका समर्थन नहीं किया जा सकता।

व्यक्ति का संप्रत्यय ऐसा होता है जिस पर चेतन व अचेतन विधेयों का प्रयोग एक साथ ही किया जा सकता है जैसे मैं खुश हूँ मेरा वजन 55 किलो है। चेतन विधेयों को स्ट्रॉसन 'पी' प्रेडिकेट तथा अचेतन को 'एम' प्रेडिकेट कहता है। एम विधेयों का प्रयोग तो अचेतन पर भी किया जा सकता है परंतु पी का प्रयोग केवल चेतन पर किया जा सकता है।

जब व्यक्ति अन्य समान सत्ताओं से टकराता है तो उसे इसका ज्ञान होता है। अन्य व्यक्तियों के व्यवहार का ज्ञान 'व्यवहारवाद' व 'संशयवाद' से होता है। परंतु सभी व्यक्तियों की चेतन क्रियाओं का अर्थ हमेशा समान ही रहता है जैसे पत्र लिखना, चित्र बनाना आदि।

आलोचना: ~~परंतु~~ — एम व पी प्रेडिकेट का प्रयोग पशु-पक्षियों के लिए भी किया जा सकता है।

• एम व पी प्रेडिकेट का प्रयोग निर्जीव वस्तुओं के लिए भी किया जा सकता है। जैसे नदी पर्वत से उतर रही है।

• अन्य व्यक्तियों की सत्ता अस्तित्व के लिए आवश्यक नहीं है।

परंतु स्ट्रॉसन ने मन-शरीर की नवीन व्याख्या कर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। साधारण भाषा का महत्व प्रतिपादित किया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. (a) "Are empirical statements conclusively verified ? (discuss)" The limitations of verification theory of meaning. 20

"क्या इन्द्रियानुभविक कथन निर्णायक रूप से सत्यापनीय है? (चर्चा करें)" अर्थ के सत्यापन सिद्धांत' की सीमाओं की चर्चा कीजिए।

तार्किक भाववादियों ने समकालीन दर्शन में अर्थ के सत्यापन सिद्धान्त के द्वारा दर्शन के क्षेत्र से तत्वमीमांसा के निरसन का प्रयास किया है। इस सिद्धान्त के अनुसार "केवल वही कथन सार्थक हैं जो या तो विश्लेषणात्मक हैं या फिर अनुभव द्वारा सत्यापनीय।" इसी कारण तत्वमीमांसीय कथन निरर्थक हैं। एन्जे एयर ने अर्थ के सत्यापनीय सिद्धान्त के द्वारा आनुभविक कथनों की सार्थकता सिद्ध की है। सत्यापन की निम्नलिखित विधियां हैं:—

सैद्धान्तिक व व्यावहारिक :- वैज्ञानिक कथनों का व्यावहारिक सत्यापन किया जा सकता है तथा मंगल पर जीवन संभव है जैसे वाक्यों का सैद्धान्तिक सत्यापन संभव है।

सबल व निर्बल :- लजरोविज के अनुसार वैज्ञानिक कथनों का सबल व निर्बल सत्यापन संभव है।

प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सत्यापन :- कुछ कथनों का प्रत्यक्ष जबकि विद्युत प्रवाह जैसे कथनों का अप्रत्यक्ष सत्यापन संभव है। इसके लिए निरीक्षण कथन का सत्य होना आवश्यक है जैसे गड्ढे भरे देखकर वर्षा होने का सत्यापन।

परंतु ए॰ बर्लिन ने इसी आधार पर तत्व मीमांसीय कथनों को सार्थक सिद्ध कर दिया जैसे :-

सत्यापनीय कथन : ईश्वर है।

अन्य कथन : घास हरी है, तो ईश्वर है।

निरीक्षणीय कथन : घास हरी है।

परंतु एयर ने इसे संशोधित करते हुए माना कि अन्य कथन भी अनुभव द्वारा सत्यापित होना चाहिए। इसके पश्चात एंजिलो चर्च ने $(\sim O_1 \cdot O_2) \vee (O_3 \sim S)$ सूत्र के द्वारा किसी भी तत्व मीमांसीय कथन को सत्यापित करने के दावे के पश्चात यह सिद्धान्त निरर्थक हो गया।

सत्यापन सिद्धान्त की सीमाएँ :-

"केवल वही कथन सार्थक हैं जो या तो अनुभव द्वारा सत्यापित हैं या फिर विश्लेषणात्मक हैं।" यह वाक्य ही सत्यापन सिद्धान्त का आधार है जबकि यह कथन स्वयं ही सत्यापित नहीं किया जा सकता। न तो परोक्ष न प्रत्यक्ष, न सबल न निर्बल, न सैद्धान्तिक न व्यावहारिक रूप से इसे सिद्ध किया जा सकता है।

- एंजिलो चर्च के सूत्र ने इस सिद्धान्त को निरर्थक सिद्ध कर दिया है।
- क्वाइन के अनुसार संश्लेषणात्मक व विश्लेषणात्मक दोनों ही वाक्य अनुभव से जुड़े हैं। अतः विश्लेषणात्मक वाक्यों को अनुभव के सत्यापन से दूर नहीं माना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जा सकता।

• काण्ट के अनुसार संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय संभव है। ऐसी स्थिति में संश्लेषणात्मक वाक्यों का सत्यापन अनुभव से नहीं किया जा सकता।

• 'वाक्य' सार्थक या निरर्थक होता है तथा प्रतिज्ञप्ति सत्य या असत्य। जबकि तार्किक भाववादियों ने यहाँ सार्थकता व निरर्थकता को सत्यता के आधार पर सिद्ध किया है।

• तार्किक भाववादियों द्वारा तत्वमीमांसा के ~~खण्डन~~ निरसन से विज्ञान का भी निरसन हो जाता है। क्योंकि विज्ञान व दर्शन में केवल क्षेत्र की व्यापकता की भिन्नता है। इसी कारण जॉन पासमूर ने कहा है कि एअर अगर तत्वमीमांसा को आग में जलाने का प्रयास करते हैं तो विज्ञान भी साथ ही जल जाएगा तथा विज्ञान को बचाने के प्रयास में तत्वमीमांसा भी बच जाती है।

इस प्रकार तार्किक भाववादियों द्वारा तत्वमीमांसा का निरसन अर्थ के सत्यापन सिद्धान्त के आधार पर पूर्णतया नहीं किया जा सका।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. **(b)** Explain the reasons given by Moore for defence of common-sense. 15

सामान्य बुद्धि के बचाव में मूर द्वारा दिए गए तर्कों को व्याख्या कीजिए।

मूर समकालीन वस्तुवादी दार्शनिक हैं, जिन्होंने सामान्य बुद्धि के बचाव के समर्थन में तर्क दिए हैं। मूर इसके लिए सामान्य विश्वास की दो सूचियाँ बनाते हैं - स्वयं व अन्य से संबंधित। ~~धन्य~~ मानना है कि सामान्य विश्वासों का ज्ञान सभी को साधारण भाषा के माध्यम से ही हो जाता है। सामान्य बुद्धि के बचाव में मूर द्वारा दिए गए तर्क। —

सार्वभौमिक स्वीकृति पर आधारित तर्क :- मूर के अनुसार कुछ विश्वास ऐसे हैं जिन पर सभी व्यक्ति विश्वास करते हैं, जैसे मेरे हाथ, पैर, शरीर आदि

अनिवार्यता पर आधारित तर्क : — जीवन के सुचारु संचालन के लिए कुछ विश्वासों को मानना आवश्यक है जैसे पानी पीने से प्यास बुझती है।

अनुभव पर आधारित तर्क। — अनुभव के लिए संवेदनाएँ आवश्यक हैं। इन संवेदनाओं का कोई न कोई आधार अवश्य होगा। सभी को अनुभव होता है। इस आधार पर सामान्य विश्वासों का समर्थन किया जा सकता है।

स्वप्न पर आधारित तर्क — प्रत्ययवादी मानते हैं कि हो सकता है संपूर्ण जगत एक स्वप्न ही हो, वास्तविकता नहीं। मूर का मानना है कि स्वप्न अवस्था ~~वास्त~~ जाग्रत अवस्था के सापेक्ष है।

आपातिकता से से संबंधित तर्क ! - कुछ विश्वासों

को न मानने से व्याघात उत्पन्न होता है जैसे मेरे दो हाथ हैं।

परम्परा (कन्विक्शन) पर आधारित तर्क। कुछ ऐसे विश्वास हैं जिन्हें सदियों से माना जा रहा है।

सामान्य बुद्धि के विश्वास सार्वभौमिक रूप से सामान्य बुद्धि के वयस्कों द्वारा स्वीकृत विश्वास हैं, जिन्हें साधारण भाषा से समझा जा सकता है। इनके लिए तर्क की नहीं अवबोध्य की आवश्यकता है।

परंतु मूर के सामान्य बुद्धि के वाद के तर्कों की आलोचना की जाती है कि यदि ये सामान्य विश्वास हैं तो मूर द्वारा इनको सिद्ध करने का उपाय नहीं किया जाना चाहिए। दिए गए तर्क अपर्याप्त हैं। कई विश्वास ऐसे होते हैं जो भविष्य में अप्रासंगिक हो जाएँगे।

सभी तर्क एक दूसरे पर आधारित हैं तथा कुछ तर्कों की पुनरावृत्ति भी की गई है। दर्शन की मैं आकारिक भाषा का अपना महत्व है।

परंतु मूर के इस उपाय का अपना महत्व है। तार्किक भाववाद पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. (c) Are the arguments given by J.E. Moors against idealism, adequate? Give reasons. 15

क्या जी.ई. मूर के द्वारा आदर्शवाद के विरुद्ध दिए गए तर्क पर्याप्त है? कारण दीजिए।

जी.ई. मूर वस्तुवादी दार्शनिक हैं, इन्होंने आदर्शवाद के खण्डन के लिए दो प्रकार के तर्क दिए हैं — ज्ञानमीमांसीय व तार्किक) तार्किक तर्क के आधार पर मूर ने बर्कले के कथन सत्ता दृश्यता है" का खण्डन किया है। इसके लिए मूर ने पूर्ण तादात्म्य, अपूर्ण तादात्म्य व "संश्लेषणात्मक-विश्लेषणात्मक भेद" के आधार पर आलोचना की है। मूर का मानना है कि सत्ता दृश्यता है' को किसी भी आधार पर सिद्ध नहीं किया जा सकता।

प्रत्ययवादी की दूसरी मान्यता है 'ज्ञान व ज्ञान के विषय में अनिवार्य संबंध होता है।' मूर इसका भी खण्डन करते हैं। मूर का मानना है कि ~~ज्ञाता~~ वस्तु की सत्ता ज्ञाता से पृथक व स्वतंत्र होती है।

परंतु मूर प्रत्ययवाद का खण्डन पूर्णतया नहीं कर पाए। इसके निम्नलिखित कारण हैं:—

बर्कले के प्रत्ययवाद का खण्डन पूरी तरह से नहीं किया गया। क्योंकि बर्कले ने वस्तुनिष्ठता को स्वीकार करते हुए प्रत्ययों का अंतिम आधार ईश्वर को स्वीकार किया है।

- बर्कले अन्य आत्माओं की सत्ता भी स्वीकार करता है अतः पूर्णतया आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी नहीं है।
- मूर ने केवल बर्कले के सत्ता दृश्यता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का खण्डन करके ही प्रत्ययवाद का खण्डन मान लिया है जबकि प्लेटो, हीगल, बुद्धिवादी भी प्रत्ययवादी हैं। इनका किसी का खण्डन मूर ने नहीं किया है।

• विट्गेन्सटीन का मानना है कि मूर ने पूर्ववर्ती दार्शनिक समस्याओं का अतिसरलीकरण किया है।

• मूर वस्तु की सत्ता ज्ञाता से पूर्णतया पृथक व स्वतंत्र मानते हैं। परंतु स्टेस का मानना है कि यह संभव नहीं है। क्या मूर किसी ऐसी वस्तु का अस्तित्व बता सकते हैं जिसे अभी तक किसी ने न देखा हो।

• मूर दर्शन में आकारिक भाषा के महत्व को नकार देते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मूर ने प्रत्ययवाद का खण्डन करने का प्रयास किया परंतु उसमें पूर्णतया सफल नहीं हो पाए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. (a) Explain the theory of language games and its application to philosophy. 20

'विट्गेंस्टीन के भाषायी खेल सिद्धांत को स्पष्ट करें और इसकी दर्शन में उपयोगिता पर चर्चा कीजिए।

उत्तरवर्ती विट्गेंस्टीन ने भाषायी खेल सिद्धांत के माध्यम से दार्शनिक समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया है। इसके अनुसार दार्शनिक समस्याएँ भाषा को चित्र के साथ बाँधने से उत्पन्न होती हैं। भाषा की बीविचमेंट शक्ति द्वारा जब साधारण भाषा को छुट्टी पर भेज दिया जाता है तो इससे दार्शनिक समस्याएँ पैदा होती हैं।

खेल सिद्धान्त के द्वारा इस समस्या को दूर किया जाता है। अर्थ व उपयोग सिद्धांत का प्रयोग करने के लिए भाषायी खेल खेला जाता है। यह बोतल में बंद मक्खी को बाहर का रास्ता दिखाने के समान है। इस प्रकार यह एक उपचार प्रक्रिया है।

खेल की कोई निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती। खेलों में केवल "फैमिली रिजेम्बलेंस" पाई जाती है।

खेल के कोई निश्चित नियम नहीं होते बल्कि संदर्भ के अनुसार व उपयोग के अनुसार शब्द का अर्थ तय होता है। क्योंकि भाषा अनेक कार्य करती है जैसे आज्ञा देना, आशीर्वाद देना, गाली देना आदि। अतः

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

भाषा, औजारों के बक्से के समान होती है, जिसमें एक ही औजार अनेक कार्य करता है जैसे ~~आधा~~ हथौड़ा तोड़ने, ठोकने व पेपरवेट का कार्य करता है।

इसी कारण विट्गिन्सटीन का मानना है कि "देखो, विचार मत करो" | "उपयोग को देखो, अर्थ को नहीं" | इसके लिए विभिन्न भाषायी खेल खेलने की आवश्यकता है।

भाषायी खेल के माध्यम से ही विट्गिन्सटीन ने तत्वमीमांसा, आत्मा, जगत, ईश्वर संबंधी कई समस्याओं का समाधान किया। भाषायी खेल खेलने के लिए किसी आकारिक भाषा की आवश्यकता नहीं है बल्कि यह साधारण भाषा के आधार पर ही खेला जा सकता है।

दर्शन में उपयोगिता :—

भाषायी खेल दार्शनिक समस्याओं के समाधान का एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

· इसके माध्यम से कई दार्शनिक समस्याओं का समाधान किया गया है।

· चित्र सिद्धान्त व 'सेइंग व शोइंग' सिद्धांत से संबंधित कई समस्याओं का समाधान

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भाषायी खेल के माध्यम से किया गया है।

- इसके द्वारा साधारण भाषा सिद्धान्त को महत्व मिला (इससे परवर्ती साधारण भाषा दार्शनिकों को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।
- स्ट्रॉसन के दर्शन पर उत्तरवर्ती विटगेंस्टाइन के व साधारण भाषा दर्शन का गहरा प्रभाव पड़ा
- दर्शन के क्षेत्र में व्याप्त आत्मकेन्द्रवादिता से मुक्ति प्रदान करने का कार्य भाषायी खेल ने किया।
- आकारिक भाषा संबंधी जटिलताओं को दूर किया जिससे दर्शन को जनसामान्य के अनुकूल बनाया जा सके।
- विटगेंस्टाइन ने भाषायी खेल के आधार पर निजी भाषा का भी खण्डन किया।

परंतु भाषायी खेल की कुछ कमियां भी रही जैसे आकारिक भाषा के महत्व को नकारना। इसी कारण रसेल जैसे आकारिक भाषा के समर्थकों ने इसकी आलोचना भी की

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. (b) Are necessary propositions linguistic by nature ? Discuss. 15

क्या अनिवार्य प्रतिज्ञप्तियों का सिद्धांत भाषायी होता है? चर्चा कीजिए।

तार्किक भाववादियों के द्वारा अनिवार्य प्रतिज्ञप्तियों के भाषायी सिद्धान्त के माध्यम से गणित के सिद्धान्तों की सार्थकता सिद्ध की है। उनके अनुसार केवल वही कथन सार्थक है जो अपना सिद्धान्त देने से पूर्व उन्होंने काण्ट के संश्लेषणात्मक विश्लेषणात्मक भेद का खण्डन किया। इनके अनुसार काण्ट इस विभाजन में तार्किक व मनोवैज्ञानिक दो कसौटियों को संयुक्त कर देते हैं तथा इससे बिना उद्देश्य व विधेय के स्पष्ट विभाजन वाले वाक्यों का सत्यापन संभव नहीं है।

अनिवार्य प्रतिज्ञप्तियों की सार्थकता या तो मिल के अनुसार अनुभव पर आधारित मानी जा सकती है या फिर विश्लेषणात्मकता के आधार पर। परंतु तार्किक भाववादी मिल के दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं करते।

तार्किक भाववाद के अनुसार विश्लेषणात्मक कथनों की सार्थकता उनमें प्रयुक्त शब्दों के अर्थ के आधार पर की जा सकती है। यदि उनमें प्रयुक्त शब्द समानार्थक है तो प्रतिज्ञप्ति सार्थक है अन्यथा नहीं। इसका प्रयोग भौतिकी व गणित शास्त्र में किया जाता है जैसे 5+7=12। सभी कुँवारे अविवाहित हैं। इस कारण इन कथनों के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनिवार्यता होती है।

परंतु क्वाइन द्वारा इस सिद्धान्त की आलोचना की जाती है :-

- विश्लेषणात्मकता की परिभाषा में चक्रकदोष है। एक ही प्रतिज्ञप्ति में प्रयुक्त शब्द पर्यायवाची होते हैं तथा पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से प्रतिज्ञप्ति विश्लेषणात्मक हो जाती है।
- इसमें अनवस्था दोष भी है।
- क्वाइन के अनुसार संश्लेषणात्मक व विश्लेषणात्मक दोनों ही कथन अनुभव से जुड़े होते हैं। विश्लेषणात्मक कथन अप्रत्यक्ष रूप से अनुभव से जुड़े रहते हैं। इस कारण इनका सत्यापन भी अनुभव के आधार पर किया जा सकता है।
- विश्लेषणात्मक कथनों में अर्थ तत्व के साथ ही तथ्य तत्व भी होता है। बस अर्थतत्व की प्रधानता होती है।

इस प्रकार क्वाइन अनिवार्य प्रतिज्ञप्तियों के भाषायी सिद्धान्त की आलोचना करता है परंतु स्वयं उसका सिद्धान्त भी आलोचनाओं से दूर नहीं है। स्ट्रासन के अनुसार क्वाइन शुद्ध गणित व व्यावहारिक गणित में भेद नहीं करता जैसे दो बूंद मिलकर एक बड़ी बूंद बनाती है। इसी प्रकार तार्किक असंभावना को भी क्वाइन नहीं स्पष्ट करता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. (c) Explain the distinction of Strawson between 'M' and 'P' predicates. 15

'स्ट्रॉसन के 'एम' व 'पी' विधेयों के मध्य विभेद को स्पष्ट कीजिए।

स्ट्रॉसन मूल सत्ताओं की खोज के क्रम में दो मूल सत्ताओं की स्थापना करता है (क) मूल विशेष
(ख) व्यक्ति।

व्यक्ति के संप्रत्यय को स्पष्ट करने के लिए एम व पी विधेयों का समर्थन किया है। स्ट्रॉसन के अनुसार एम विधेयों का प्रयोग भौतिक वस्तुओं के लिए किया जाता है तथा पी विधेयों का प्रयोग चेतन वस्तुओं के लिए।

एम विधेयों का परिवर्तन होता रहता है क्योंकि ये व्यक्ति व भौतिक वस्तु के बाह्य स्वरूप से संबंधित होते हैं। जबकि पी विधेय तुलनात्मक रूप से स्थाई होते हैं।

व्यक्ति के संप्रत्यय पर एम व पी दोनों विधेयों का समान रूप से आरोपण किया जा सकता है।

एम विधेय के आधार पर अन्य भौतिक शरीरों की पहचान होती है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जबकि पी विधेय के आधार पर वैयक्तिक अनन्यता की पहचान होतीहै।

~~अतः~~ निष्कर्षतः कहा जा सकताहै कि व्यक्ति के संप्रत्यय के लिए दोनों ही विधेय आवश्यक है। मृत्यु के पश्चात एक स्तर पर फिर भी स्ट्रॉसन ~~~~ शरीरविहीन चेतना को स्वीकार करता है, परंतु जगत के स्तर पर वह एम व पी दोनों विधेयों की सत्ता समानरूप से एक साथ स्वीकार करताहै।